ओमशान्ति मीडिया-शांतिवन। ओमशान्ति मीडिया कार्यालय में दादियों के आगमन पर उन्हें ओमशान्ति मीडिया पत्रिका व शिवरात्रि पर निकाले गए विशेषांक **'शिव अवतरण'** के बारे में जानकारी देते हुए ब्र.कु. गंगाधर। साथ हैं ब्र.कु. करुणा,मल्टी मीडिया चीफ, ओमशान्ति मीडिया स्टाफ ब्र.कु. दिलीप, ब्र.कु. अनुज, ब्र.कु. राकेश, ब्र.कु. ईश्वर, ब्र.कु. कमलेश, ब्र.कु. गोविंद, ब्र.कु. भगवान, ब्र.कु. मोनिका एवं ब्र.कु. केतन।

लाभप्रद है... - पेज 4 का शेष

संबंधी रोगों में राहत मिलती है। मधुमेह में यह विशेष लाभप्रद होता है, मधुमेह के रोगी को रोज़ाना तीन रत्ती जामुन का चूर्ण दिया जाना लाभप्रद होता है। यह खाँसी में लाभप्रद, मसूड़ों को मजबूत करता है।

आड़ू: वास्तव में यह फल चीन का है। यूरोप में भी यह काफी पाया जाता है। भारत में हिमाचल, मणिपुर और उत्तरी भागों में काफी पैदा होता है। यह पौष्टिक, मधुर, हृदय रोगों में लाभप्रद, प्रमेह, बवासीर के रोगी के लिए उपयोगी होता है। इसके पत्ते कृमिनाशक होते हैं।

अंगूर: यह फल कश्मीर, कर्नाटक आदि स्थानों में काफी होता है। काले अंगूर और हरे अंगूर का शर्बत शरीर के लिए पुष्टिकारक होता है। ज्वर, हल्की हरारत एवं पेट के रोगों में तो यह बहुत हितकारी होता है। नेत्रों के लिए अंगूर का सेवन बहुत फायदेमंद होता है।

संतरा, मौसमी, मालटा एवं कीनू: ये फल भारत के लगभग सभी भागों में प्राप्त होते हैं। नागपुर का संतरा, मुम्बई की मौसमी प्रसिद्ध है। इनके फलों का रस पेट के रोग, गले के रोग, श्वास के रोग, दस्त में लाभदायक होता है। बलवर्द्धक, ज्वरनाशक, प्यास बुझाने वाले, रक्त पित्त नाशक। विटामिन सी और ए होने से नेत्र रोग में उपयोगी होता है। इसके रस में हींग मिलाकर देने से कृमिनाश होता है।

अलूचा: गढ़वाल, कश्मीर, पश्चिम हिमाचल के क्षेत्रों में अधिक होता है। यह प्यास को हरने वाला, खाँसी में लाभप्रद होता है। गले के रोगों में उपयोगी और उसके पत्ति कृमिनाशक होते हैं।

चीकू: यह पित्तनाशक, ज्वरनाशक एवं लौहपूर्ण होता है।

पपीता: यह पौष्टिक, रूचिकर, शीतल होता है। मधुमेह के रोगियों के लिए लाभकारी होता है। कच्चे पपीते की सब्जी पेट के रोगों में हितकारी होती है। इसके बीज तो अनेक औषधियों में उपयोगी होते हैं।

खरबूजा: यह अमृत के समान गुणकारी होती है। शीतल, पसीना लाने वाला होता है। गुर्दे के रोग में लाभकारी, पीलिया में फायदेमंद, पथरी को तोड़ता है। पेट की गर्मी को कम करता है। मुख पर लेप करने से झाइयां मिटती है। इसके बीज पेट साफ करते हैं, नेत्रों के लिए शक्तिदायक, पेशाब की जलन और जिगर की सूजन भी मिटाते हैं।

तरबूज: यह पीलिया में लाभप्रद, वात कफ नाशक होता है। इसके बीज मधुर और नेत्रों के लिए उपयोगी, बलकारक, धातुवर्द्धक होते हैं, खून की उल्टी में भी इसके बीजों से लाभ होता है।

सिंघाड़ा: यह दाह दूर करने वाला होता है, इसके सेवन से प्यास कम लगती है। यह त्रिदोषनाशक, श्रम हारक, सूजन और संताप दूर करने वाला होता है। सिंघाड़ा ज्वरनाशक, मलेरिया में सहायक एवं रक्त प्रदर में उपयोगी होता है।

नारियल: भारी कब्ज दूर करने वाला, बलकारक, ज्वर में लाभप्रद, प्यास बुझाता है। रूधिर दोष और क्षय रोगी के लिए भी लाभप्रद होता है। इसका तेल केशों के लिए उपयोगी होता है और जले स्थानों पर लगाने से लाभ मिलता है।

दूसरों को समझने... - पेज 10 का शेष

कभी प्रेम नहीं कर सकता, वह हमेशा असंतुष्ट रहता है, क्योंकि उसे सबसे लेने की मंसा होती है और मांगने वाला या लेने वाला कभी राजा नहीं बन सकता, वह हमेशा भिखारी ही रहता है। आत्मप्रेम में व्यक्ति अपने निजी स्वरूप में वही है, सिर्फ वह स्वयं को स्वयं की नज़र से देख नहीं पा रहा है। वह हमेशा दूसरों की नज़रों से अपने आप को देखने की कोशिश करता है, लेकिन उसे पता नहीं कि दूसरे तो पहले से ही खाली हैं। क्या जो दूसरे कहेंगे वो सही हो सकता है?

इसी आधार पर ही ईश्वरीय प्रेम भी

परमात्मा के प्रति प्रेम, हमारे दुनिया से विलगाव की भावना और अपने अकेलेपन से मुक्ति का नाम है। आपको पता होना चाहिए कि लोग हमेशा मृत्यु क्यों चुनना चाहते हैं। क्योंकि वहां कोई संघर्ष नहीं है, वहां कोई ख्वाईश नहीं है, सिर्फ शांति है। वहां हमें न श्वास की फिकर है न अस्तित्व की। वैसे भी देखा जाए तो सभी धर्मों में ईश्वर को विलक्षण गुणों के आधार से उच्चतम माना गया है। उन्हीं गुणों को मनुष्य स्वप्नों में ढूंढ़ता है तथा अपने किसी स्वप्न को पूरा करने हेतु वो इन्हीं ईश्वर के विलक्षण गुणों को मनुष्यों के साथ जोड़कर देखता है। और आज हर मनुष्य उन गुणों की पूजा कर लेता है।

आज हम चाहे महान आत्मा, चाहे दिव्य आत्मा, चाहे पुण्य आत्मा, चाहे धर्म-आत्मा के साथ क्या करते हैं, उन्हें एक जगह बिठा देते हैं और वापस अपने संसार में लिप्त हो जाते हैं। शायद ईश्वर को मनुष्य की आकृति देने के पीछे मूल वजह यही होगी! ध्यान देने वाली बात यह है कि और तरह के प्रेम में हमें अपने आपको दूसरे के प्रेम पर खड़ा उतरना होता है, लेकिन ईश्वरीय प्रेम बिल्कुल अलग है, यह वो प्रेम है जिसमें जो जैसा है उसे वैसा ही स्वीकार करने की प्रेरणा मिलती है। ईश्वरीय प्रेम की भी तो कुछ अवधारणाएं हैं ना। जैसे यदि ईश्वर को माता मानें कि माँ अपने बच्चे को अपनाकर उसे क्षमा करती है और यदि पिता माने तो योग्यता और प्रतिद्वंदिता के आधार पर निर्णय लेते हैं। एक सच्चे धार्मिक व्यक्ति का ईश्वर की छवि से कोई लेना-देना नहीं होता है, वो तो सिर्फ उनके लिए प्रेम का एक स्वरूप है। जब हम कहते हैं कि प्रेम ही ईश्वर का स्वरूप है तो वह कोई बाहर की चीज़ तो नहीं होगी ना। मनुष्य, मनुष्य में भेद करने वाला प्रेम कोई प्रेम है! ईश्वर को प्रेम करने का मतलब है समस्त सृष्टि को प्रेम करना।

प्रेम वहीं संभव है जहां व्यक्ति अपने व्यक्तित्व के केन्द्र में से उस दूसरे की तरफ बढ़ता है और उसे पाता है। प्रेम का अर्थ है खुद को बिना शर्त उस दूसरे को दे देना, यही समर्पण उस दूसरे के भीतर प्रेम पैदा करता है। जो व्यक्ति खुद में आस्था रखता है वह दूसरों के प्रति भी आस्थावान और विश्वासी हो जाता है। अगर हमारी खुद में आस्था नहीं तो हमारे लिए अपनी ही पहचान मुश्किल हो जाती है, तब हमारे लिए हमारी खुद के राय के बजाए दूसरे की राय महत्वपूर्ण हो जाती है। तो बस! प्रेम करिए, करिए, करिए, करिए, और बस करते ही जाइए।

शांतिवन। जम्मू कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री माननीय फारुख अब्दुल्ला को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. दिलीप, ब्र.कु. राजेश, ब्र.कु. नीरज, ब्र.कु. रेणुका।

सीकर-राज.। विश्व शांति मेला का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए बायें से ब्र.कु. स्वाति, ब्र.कु. पुष्पा, पवन मोदी, सुभाष महरिया,पूर्व केन्द्रीय ग्रामीण विकास राज्यमंत्री, ब्र.कु. पूनम, गोवर्धन वर्मा,विधायक, महेश जी व ब्र.कु. अरुण।

सोजत सिटी-राज.। 'स्वच्छ भारत अभियान' के अंतर्गत निकाली गई रैली में उपस्थित हैं म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन के चेयरमैन मांगीलाल जी, कॉर्पोरेटर विकास टंक, ब्र.कु. कविता, ब्र.कु. आरती व अन्य।

आगरा (सेक्टर 7) : ग्राम विकास अभियान के अन्तर्गत आयोजित रैली का शुभारम्भ करते हुए शिम्बुजिया कॉलेज के डायरेक्टर जी.एस. राणा, ब्र.कु. सरिता, ब्र.कु. गीता व अन्य।

डिहरी-बिहार। 'अखिल भारतीय किसान सशक्तिकरण अभियान' के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए प्रखण्ड प्रमुख नीतू सिंह, प्रखण्ड कृषि पदाधिकारी, महिला समाजसेवी सुनीता सिंह, ब्र.कु. शोभा व अन्य।

बख्तियारपुर-बिहार। बख्तियारपुर चर्च के सेक्रेट्री फादर बर्थलोम्यू व विमला विद्यालय की प्रिन्सीपल मोनिका बहन के साथ ज्ञानचर्चा करते हुए ब्र.कु. मृदुल।